657

हरिदास संस्कृत ग्रन्थमाला २५८

महाकविजयदेवप्रणीता

रतिमञ्जरी

हिन्दी-गद्य-पद्यानुवादसहिता

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी

॥ श्रीः ॥

हरिदास संस्कृत ग्रन्थमाला
२५८

महाकविजयदेवप्रणीता

रतिमञ्जरी

हिन्दी-गद्य-पद्यानुवादसहिता

अनुवादकः-
श्री पं० रमाकान्त द्विवेदी

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी-१
१९७६

॥ श्रीः ॥

रतिमञ्जरी

हिन्दीगद्यपद्यानुवादसहिता
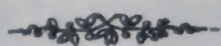
मङ्गलाचरणम्

मधुर मुरली रख अधर पर प्रेम-पंथ पुकारता।
किंकिणी पद में पहन मधु राग वह झंकारता॥
मुग्ध वनिताएँ जिसे घेरें उभारे काम है।
उस रसिक नटराज को मेरा सप्रेम प्रणाम है॥
सौन्दर्य की प्रतिमा, मनोहर मंजु रसमय जो सदा है।
प्रेम का प्याला पिलाता युवति-जन को जो सदा है॥
वह कुलिश का शर न रखता, बाण फूलों का बना है।
कुसुमशर भी पांच ही उस मदन प्रभु की वन्दना है॥

नत्वा सदाशिवं देवं नागराणां मनोहरम्।
रचिता जयदेवेन सुबोधा रतिमञ्जरी॥ १॥

रसिक या पुरवासियों के मनहरण जो हैं कहाते।
उन सदाशिव देव की कर बन्दना जो हैं सुहाते॥
लिख रहे जयदेव कवि हैं आज यह सुन्दर कहानी।
नाम है रतिमञ्जरी सुख से समझ सकते सुवानी॥ १॥

विलासियों अथवा नगरवासियों के मनमोहक सदा कल्याण-
ारी शिवजी की वन्दना कर जयदेव कवि रतिमञ्जरी नामक काम-
ास्त्र की रचना करते हैं॥ १॥

रतिशास्त्रं कामशास्त्रं तस्य सारं समाहृतम् ।
सुप्रबन्धं सुसङ्क्षिप्तं जयदेवेन भण्यते ॥ २ ॥

कामशास्त्र रतिशास्त्र का लेकर तत्त्व उदार ।
लिखते हैं जयदेव यह निज सङ्क्षिप्त विचार ॥ २ ॥

रतिशास्त्र और कामशास्त्र के तत्त्वों को खींचकर जयदेव कवि सुन्दर रचनावाली सङ्क्षिप्त रतिमञ्जरी को कहते हैं ॥ २ ॥

[१] पद्मिन्यादिनायिकालक्षणप्रकरणम्

पद्मिनी चित्रिणी चैव शङ्खिनी हस्तिनी तथा ।
शशो मृगो वृषोऽश्वश्च स्त्रीपुंसोर्जातिलक्षणम् ॥ ३ ॥

पद्मिनि चित्रिणि शंखिनी नारि हस्तिनी नाम ।
अश्व, वृषभ मृग सरिस शश नरलक्षण सुखधाम ॥ ३ ॥

स्त्री और पुरुषों के विभिन्न भेदों का लक्षण प्रारम्भ होता है। पद्मिनी, चित्रिणी, शङ्खिनी और हस्तिनी, ये चार प्रकार की स्त्रियां होती हैं—इसी प्रकार शश, मृग, वृष तथा अश्व लक्षण वाले चार प्रकार के पुरुष होते हैं। यही स्त्री और पुरुषों के जातीय लक्षण हैं ॥ ३ ॥

भवति कमलनेत्रा नासिकाक्षुद्ररन्ध्रा,
अविरलकुचयुग्मा चारुकेशी कृशाङ्गी ।
मृदुवचनसुशीला गीतवाद्यानुरक्ता,
सकलतनुसुवेशा पद्मिनी पद्मगन्धा ॥ ४ ॥

नयन कमल से शोभाशाली छिद्र नासिका के लघु सुन्दर ।
दोनों कुच हों सघन अंग कृश, कच की शोभा परम मनोहर ॥
वाणी में माधुर्य सरलता, गीत वाद्य में मन सहचर हो ।
नाम 'पद्मिनी' पद्मगन्धतनु जिसका पूर्णवेश सुन्दर हो ॥ ४ ॥

पद्मिनी स्त्री का लक्षण—जिसके नयन कमल सदृश हों, नासिका के छिद्र सङ्कीर्ण हो, जिसके दोनों कुचों के बीच का भाग बहुत पतला हो, मनोहर बाल हो, कृश शरीर हो, वाणी में कोमलता हो, सरल स्वभाव हो, गाने बजाने में अनुराग हो, सम्पूर्ण शरीर की सजावट सुन्दर हो और जिसके शरीर से कमल के समान मनोहारी गन्ध निकल रहा हो ॥ ४ ॥

भवति रतिरसज्ञा नातिखर्वा न दीर्घा,
तिलकुसुमसुनासा स्निग्धनीलोत्पलाक्षी ।
घनकठिनकुचाढ्या सुन्दरी बद्धशीला,
सकलगुणसमेता चित्रिणी चित्रवक्त्रा ॥ ५ ॥

रति के रस मे निपुण नहीं कद में छोटो या बहुत बड़ी हो।
तिलपुष्पों के सदृश नासिका नील कमल सी आंख बड़ी हो ॥
सुन्दर उसके शीलभाव हों सघन कठोर कुचों वाली हो।
सकल गुणों से युक्त 'चित्रिणी' मधुर मनोहर मुखवाली हो ॥ ५ ॥

चित्रिणी स्त्री का लक्षण—जो रतिविलास में चतुर हो, और जिसका आकार न तो बहुत बड़ा हो और न बहुत छोटा। जिसके नाक की बनावट तिल-पुष्प के समान हो, आँखें स्निग्ध नील-कमल के समान हो, कठोर कुचों वाली हो, स्वयं सौन्दर्य की प्रतिमा हो, सुन्दर स्वभाव हो, सभी गुणों से अलंकृत हो—और मंजुल मुखवाली हो ॥ ५ ॥

दीर्घातिदीर्घनयना वरसुन्दरी या,
कामोपभोगरसिका गुणशीलयुक्ता ॥
रेखात्रयेण च विभूषितकण्ठदेशा,
सम्भोगकेलिरसिका किल शंखिनी सा ॥ ६ ॥

नेत्र हों अतिदीर्घ दीर्घ सुदेह सुन्दर हो रसीली।
काम के उपभोग में हो निपुण गुणशीला रँगीली॥
कण्ठ जिसका तीन रेखा से सुशोभित हो रहा हो।
'शंखिनी' समझो उसे सम्भोग में मन रम रहा हो॥ ६॥

शङ्खिनी के लक्षण—जिसका आकार लम्बा हो, बड़ी-बड़ी आखें हो, अत्यन्त सुन्दरी हो, रति के विलास में रसिका हो, गुणवती तथा सुशीला हो, जिसका कण्ठप्रदेश तीन रेखाओं से सुशोभित हो रहा हो और काम की क्रीड़ाओं में निपुण हो॥ ६॥

स्थूलाधरा स्थूलनितम्बभागा,
स्थूलाङ्गुलिः स्थूलकुचा सुशीला।
कामोत्सुका गाढरतिप्रिया या,
नितान्तभोक्त्री करिणी मता सा॥ ७॥

हों नितम्ब विशाल जिसके अधर से भी पुष्ट हो जो।
स्थूल हों स्तन उँगलियाँ भी पर सुशीला हो स्वयं जो॥
काम हित आतुर सदा जो गाढ़ रति—अनुरागिणी हो।
'हस्तिनी' कहते उसे जो भोग में अतिरागिणी हो॥ ७॥

हस्तिनी नायिका के लक्षण—जिसके अधर मोटे हों, उत्तुङ्ग नितम्ब हो अंगुलियां मोटी हों, स्तन भी स्थूल (विशाल) हों, सरल स्वभाव हो, काम के विषय में उत्कण्ठित हो, गाढालिङ्गन चाहती हो और अत्यन्त रमण करने वाली हो॥ ७॥

शशके पद्मिनी तुष्टा चित्रिणी रमते मृगम्।
वृषभे शङ्खिनी तुष्टा हस्तिनी रमते हयम्॥ ८॥

पद्मिनी शश में रमे, अरु चित्रिणी मृग से खुशी।
शंखिनी वृष भोगिनी अरु हस्तिनी हय से खुशी॥ ८॥

पद्मिनी आदि स्त्रियों को सन्तुष्ट करने वाले पुरुषों के लक्षणः—पद्मिनी स्त्री शशकलक्षण वाले पुरुषों से प्रसन्न रहती हैं, चित्रिणी मृगलक्षण वाले पुरुषों से सन्तुष्ट रहती हैं, शङ्खिनी स्त्री वृषभलक्षण वाले पुरुषों से रमण करती हैं और हस्तिनी नायिका हयलक्षण वाले पुरुषों से भोग करती है ॥ ८ ॥

पद्मिनी पद्मगन्धा च मीनगन्धा च चित्रिणी ।
शङ्खिनी क्षारगन्धा च मदगन्धा च हस्तिनी ॥ ९ ॥

कमलगन्धा पद्मिनी है, चित्रिणी है मत्स्यगन्धा ।
क्षारगन्धा शंखिनी है, हस्तिनी मद-मत्तगन्धा ॥ ९ ॥

सुगन्धिभेद से स्त्री का लक्षणः—पद्मिनी स्त्री से कमल सी सुगन्धि आती है, चित्रिणी स्त्री में मछली की गन्ध मालूम पड़ती है, शङ्खिनी स्त्री से खारी गन्ध निकलती है और हस्तिनी स्त्री मद के सदृश गन्ध वाली होती है ॥ ९ ॥

बाला च तरुणी प्रौढा वृद्धा भवति नायिका ।
गुणयोगेन रन्तव्या नारी वश्या भवेत्तदा ॥ १० ॥

नायिका-बाला तथा वृद्धा युवति प्रौढा कहाती ।
रमण करने पर यही गुण योग से वश स्वयं आती ॥ १० ॥

नायिकाओं के भेदः—बाला, तरुणी, प्रौढा और वृद्धा-ये चार स्त्रियों के भेद हैं। इनके साथ गुण के योग से सम्भोग करना चाहिए। क्योंकि गुण के प्रताप से ये रमणियां स्वयं वशीभूत हो जाती हैं ॥ १० ॥

आषोडशाद्भवेद्बाला तरुणी त्रिंशका मता ।
पञ्चपञ्चाशका प्रौढा भवेद्वृद्धा ततः परम् ॥ ११ ॥

बाला सोलह वर्ष तक तरुणी तीस प्रमाण ।
पचपन प्रौढा जानिए वृद्धा आगे जान ॥ ११ ॥

नायिका के लक्षणः—सोलह वर्ष की अवधि तक स्त्री बाला कहलाती है, तीस वर्ष तक तरुणी, पचास वर्ष पर्यन्त प्रौढा और इसके (पचपन के) बाद स्त्री की गणना वृद्धा में होती है ॥ ११ ॥

फलमूलादिभिर्बाला तरुणी रतियोगतः ।
प्रेमदानादिभिः प्रौढा वृद्धा च दृढताडनात् ॥ १२ ॥

भोज्यफल के दान से बाला, युवति रति-भोग से ।
प्रेम से प्रौढा खुशी, वृद्धा चपत के योग से ॥ १२ ॥

स्त्रियों को वश में करने की विधिः—बाला स्त्री फल, मूल आदि खाद्य पदार्थों से सन्तुष्ट होती है। रतिसंभोग से तरुणी नारी प्रसन्न होती है। प्रेम के आदान-प्रदान से प्रौढा स्त्री और अधिक शारीरिक दण्ड से वृद्धाएँ वश में होती हैं ॥ १२ ॥

बाला तु प्राणदा प्रोक्ता तरुणी प्राणहारिणी ।
प्रौढा करोति वृद्धत्वं वृद्धा मरणमादिशेत् ॥ १३ ॥

प्राणदायिनी बाला समझो तरुणी प्राणहारिणी है ।
वृद्ध बनाने वाली प्रौढा वृद्धा मरणकारिणी ॥ १३ ॥

स्त्री सम्भोग का फलः—बाला स्त्री प्राण देने वाली, अर्थात मन हराभरा बनाए रखती है। तरुणी नायिका प्राण का हरण करती है। प्रौढा स्त्री शरीर में वृद्धत्व का संचार करती है और वृद्धा तो प्राण ही ले बीतती है ॥ १३ ॥

[२] कामकलावर्णनप्रकरणम्

अङ्गुष्ठे चरणे च गुल्फनिलये जानुद्वये वस्तिके,
नाभौ वक्षसि जङ्घयोर्निगदिता कण्ठे कपोलेऽधरे ।
नेत्रे कर्णयुगे ललाटफलके मौलौ च वामभ्रुवा-
मूर्ध्वाधश्चलनक्रमेण कथिता चान्द्री कला पक्षयोः ॥१४॥

अंगुष्ठों में चरण गुल्फों, गोड़ में नाभि नीचे।
और नाभी में हृदय काखों, कण्ठ, गण्डस्थली में ॥
बिम्बोष्ठों में नयन, कानों में ललाटाञ्चलों में।
कामावास प्रथित रमणी—मौलि—मूल—स्थलों में ॥
ऐसा ऊर्ध्वक्रम समझ लें शुक्ल के पक्ष में है।
वैसा ही तो अधः क्रम से कृष्ण के पक्ष मे है ॥ १४ ॥

स्त्री के अङ्गों में काम निवास स्थानः—अंगूठे में, चरण में, पैर की गांठों में, घुटनों में, नाभि के अधोभाग में, नाभि में, हृदय में, काँख में, कण्ठ में, कपोल में, अधर में, नयनों में, कानोंमें, ललाट में और मस्तक में काम का निवास है—किन्तु नायिकाओं के उपरोक्त स्थलों में ऊर्ध्वक्रम से शुक्ल पक्ष और अधः क्रम से कृष्ण पक्ष में काम का निवास-स्थान बतलाया गया है ॥ १४ ॥

सीमन्ते नयनेऽधरे च गलके कक्षस्तटे चूचुके,
नाभौ श्रोणितटे मनोभवगृहे जङ्घातटे गण्डके।
गुल्फे पादतले तदङ्गुलितटेऽङ्गुष्ठे च तिष्ठत्यसौ,
वृद्धिक्षीणतया समं शशिकला पक्षद्वयोर्योषिताम् ॥१५॥

मध्यमस्तक भाग कक्षा, नेत्र जघन-स्थान में।
स्तन में, गले में, नाभि में कटि अधर जानुस्थान में ॥
पैरतल एड़ी व भग में पैर को उँगली अंगूठे।
काम दोनों पक्ष में रहते यहाँ ये सब न झूठे ॥ १५ ॥

केशवीथी (मांग में), नेत्र में, अधर में, गला में, काँख में, कुच के अग्रभाग में, नाभि में, कमर में, भग में, घुटना में, जंघा में, कपोल में, पैर की गाठों में, पैर के नीचे, पैर की अंगुली तथा पैर के अंगूठे में—कृष्ण और शुक्ल इन दोनों पक्षों में क्षय—वृद्धि क्रम से बराबर काम का निवास रहता है ॥ १५ ॥

शुक्लपक्षे वसेद्वामे पादाङ्गुलिकनिष्ठिके ।
शुक्लप्रतिपदादौ च कृष्णे चाधः प्रलम्बते ॥ १६ ॥

शुक्लपक्ष में वामपद, की छोटी उँगली जहाँ ।
कृष्ण–पक्ष में काम प्रभु उसके ही नीचे, वहाँ ॥ १६ ॥

शुक्लपक्ष तथा शुक्लपक्ष की प्रतिपद तिथि में (स्त्रियों के) बाएँ पैर की कनिष्ठ अंगुलि में काम निवास करता है और कृष्ण पक्ष में उसके (बाएँ पैर के कनिष्ठ अंगुलि के) नीचे काम देव रहते हैं ॥१६॥

पुंसः सव्ये स्त्रियो वामे शुक्ले कृष्णे विपर्ययः ।
एतानि कामस्थानानि ज्ञेयानि नागरैः सदा ॥ १७ ॥

शुक्लपक्ष में दाहिने नर के कामनिवास ।
उसी पक्ष में नारि के बाएँ कामनिवास ॥
कृष्णपक्ष में किन्तु सब हैं इसके विपरीत ।
रसिक जनों को चाहिए जानें स्मर की रीत ॥ १७ ॥

शुक्ल पक्ष में पुरुषों के दाहिने भागों में तथा औरतों के बायें भागों में काम का वास रहता है, किन्तु कृष्णपक्ष में ठीक इसका परिवर्त्तन होता जाता है । रसिकों को इसका सदा ज्ञान रखना चाहिए ॥१७॥

[३] सम्भोगसामान्यप्रकारवर्णनप्रकरणम्

बलयुक्ता यदा नारी विपरीतरतिर्भवेत् ।
सञ्चाल्य तु कलास्थानं रन्तव्या कामिनी तदा ॥१८॥

बलशीला लखि युवति को रमण करे विपरीत ।
पहले कामस्थान का जागृत करना रीत ॥ १८ ॥

संभोग का नियमः—यदि स्त्री बलवती हो तो पहले उसके काम

स्थानों को जागृत कर ले तब विपरीत (उसे अपने ऊपर चढ़ाकर) संभोग करें ॥ १८

नेत्रे कराठे कपोले च हृदि पार्श्वद्वयेऽपि च।
ग्रीवायां नाभिदेशे च कामी चुम्बति कामिनीम् ॥ १९ ॥

नयन कण्ठ उर गाल मे युगल पार्श्व के पास।
गले नाभि में कामिनी के चूमे सविलास ॥ १९ ॥

चुम्बन के स्थानः—कामी नायक कामिनी नायिका के नयन, कण्ठ, गाल, वक्षःस्थल, गला तथा नाभिप्रदेशों को चूमता है ॥१९॥

मुखे जंघे नितम्बे च जघने मदनालये।
स्तनयुग्मे सदा प्रीतिः कामी चुम्बति कामिनीम् ॥ २० ॥

मुख जंघा सुकपोल में योनि जघन के पास।
दोनों स्तन में प्रेम से कामी चूम सहास ॥ २० ॥

कामीजन कामिनी के मुख, जंघा, गाल, जघन, भग तथा कुच भागों को प्रसन्नता पूर्वक चूमता रहे ॥ २० ॥

प्रेम्णा स्त्रियं समालिङ्ग्य सीत्कारं मुखचुम्बनम्।
कराठासक्तं पुनः कृत्वा गाढालिङ्गनमाचरेत् ॥ २१ ॥

प्रेम से आबद्ध करके चूमना शीत्कार से तुम।
कण्ठ में उसको सटा फिर गाढ़ आलिंगन करो तुम ॥ २१ ॥

प्रेम पूर्वक स्त्री का आलिङ्गन कर, मुख से सीत्कार (शी-शी की आवाज) करता हुआ, उसके मुख का चुम्बन कर, पुनः उसे कण्ठ से लगाकर बल पूर्वक सम्भोग करे ॥ २१ ॥

विधृत्य हस्तौ जघनोपविष्टः सीत्कृत्य वक्त्रे च मुदा प्रचुम्ब्य।
भगे च लिङ्गं स्तनमर्दनञ्च दत्वापि कृत्वा प्ररमेच्च कामी ॥२२॥

जघन पर आरूढ़ होकर हाथ दोनों पकड़ लेना ।
प्रेम से शीत्कार पूर्वक गाल उसके चूम लेना ॥
योनि में दे लिङ्ग स्तन को जोर से मर्दन करो तुम ।
बाद में हो प्रेम पूरित रमण सुखपूर्वक करो तुम ॥ २२ ॥

कामुक पुरुष स्त्री के जघन प्रदेश पर बैठ कर, दोनों हाथों को धर कर, प्रसन्नता से सीत्कार करता हुआ मुख का चुम्बन कर भग में लिङ्ग देकर कुचों का मर्दन करता हुआ प्रेम से भोग करे ॥२२॥

केतक्यग्रनखं कृत्वा नखां स्त्रीन् पञ्च चैव वा ।
पृष्ठे च जघने योनौ दत्वा कामी रमेत्स्त्रियम् ॥ २३ ॥

केतको सम नख बनाकर तीन अथवा पांच नख से ।
कामिनो के जघन योनी पृष्ठ में दे भोग सुख से ॥ २३ ॥

कामी नायक केवड़ा के पुष्प के समान अपने नखों को नुकीला बना कर तीन या पांच नखों को पृष्ठ, जघन और भग में देकर नायिका से सम्भोग करे ॥ २३ ॥

नखरोमाञ्चितं कृत्वा दन्तेनाधरपीडनम् ।
ग्रीवामाकृष्य यत्नेन योनौ लिङ्गेन ताडनम् ॥ २४ ॥

रोमांचित नख से बना अधर दांत से पान कर ।
गला वेग से खींच दे लिङ्ग योनि में रमण कर ॥ २४ ॥

नखों से रोमाञ्चित कर, दाँतों से अधर का पान कर, आवेग से गला को खींच कर, भग में लिङ्ग देकर ताडन करे ॥ २४ ॥

लिङ्गप्रवेशनं कृत्वा धृत्वा गाढप्रयोगतः ।
पार्श्वद्वयेन सम्पीडच निस्पृहं ताडयेद्भगम् ॥ २५ ॥

लिङ्ग योनि में भेजकर बाहुपाश में ले जकड़।
भर इच्छा मन्थन करे दोनों पार्श्वों को पकड़॥ २५॥

भग में लिङ्ग का प्रवेश करा, अपने बाहुपाशों में उसे कठोरता से आवद्ध कर, दोनों पार्श्व प्रदेशों का पीडन कर इच्छानुसार योनि का मथन करे॥ २५॥

समालिङ्ग्यस्त्रियं गाढं स्तनयुग्मे च मर्दनम्।
योनौ नाभौ च संमर्द्य निष्ठुरं लिङ्गताडनम्॥ २६॥

गाढ़ालिङ्गन कर प्रथम दोनों कुच मर्दन करे।
पुनः नाभि औ योनि मल लिङ्ग कठिन ताडन करे॥ २६॥

स्त्री का कठिन आलिङ्गन कर दोनों कुचों का मर्दन करे। तदनन्तर नाभि और भग का मर्दन कर निष्ठुरता से योनि में लिङ्ग का ताडन करे॥ २६॥

केशं करेण संगृह्य दृढं सन्ताडयेद्भगम्।
वदने चुम्बनं कृत्वा भगं हस्तेन मर्दयेत्॥ २७॥

कच को हाथों से पकड़ भग का दृढ ताडन करो।
मुख का चुम्बन, हाथ से भग का दृढ मर्दन करो॥ २७॥

बालों को हाथ से अच्छी तरह पकड़ कर, भग का सम्यक्—रूपेण ताडना करे, मुख को चूम कर हाथ से योनि का मथन करे॥२७॥

[४] नायिकारति-विशेषवर्णनप्रकरणम्

कुचं करेण सम्मर्द्य पीडयेदधरं दृढम्।
रमणं पद्मबन्धेन पद्मिनीरतिमादिशेत्॥ २८॥

कुच का मर्दन हाथ से अधर पान कर प्रेम से।
कमलासन से पद्मिनी रमण करो तुम प्रेम से॥ २८॥

स्तनों को हाथ से अच्छी तरह मल कर, दृढ़ अधर पान कर, पुनः कामी कमलासन से पद्मिनी नायिका से भोग करे ॥ २८ ॥

सोत्कारं चुम्बनं पीडा गले हस्ते च चुम्बनम् ।
क्षणो क्षणो स्तने हस्तं चित्रिणी रतिमादिशेत् ॥ २९ ॥

शीत्कारों से प्रथम ही गालों का चुम्बन करो।
बाद गले अरु हाथ का उसी तरह चुम्बन करो ॥
पुनः कुचों का हाथ से मर्दन सुखपूर्वक करो।
इसी तरह से चित्रिणी के सँग रति भोगा करो ॥ २९ ॥

मुख से सीत्कार निकालता हुआ चुम्बन कर गला और हाथ को चूमे। अनन्तर हाथ से कुचों को मर्दन कर चित्रिणी स्त्री के साथ रति-संयोग करे ॥ २९ ॥

स्त्रीपुंसोस्तथान्योन्यं भगे लिङ्गे च चुम्बनम् ।
रमणान्तु तथा गाढं शङ्खिनीरतिमादिशेत् ॥ ३० ॥

स्त्री पुरुषों के लिङ्ग का चुम्बन करती, जान।
नर—चुम्बन से योनि का उसी तरह सम्मान ॥
फिर दृढ आलिङ्गन सहित रमण करे सज्ञान।
यही शंखिनी से रमण का आदेश बखान ॥ ३० ॥

स्त्री लिङ्गका और पुरुष भग का परस्पर चुम्बन कर गाढ़ालिङ्गन करे। यही शंखिनी नायिका के साथ भोग करने का नियम है ॥ ३० ॥

केशं करेण संगृह्य सुदृढं जालबन्धनम् ।
भगं करेण सन्ताड्य हस्तिनीरतिमादिशेत् ॥ ३१ ॥

कच हांथों से पकड़ कर जालबन्ध दृढ़ तुम करो।
भग मर्दन कर हाथ से रमण हस्तिनी से करो ॥ ३१ ॥

हाथ से बालों को पकड़ कर यथेच्छ जालबन्धन करे। पुनः हाथ से भग को मथन कर हस्तिनी नायिका से रतिविलास करे ॥ ३१ ॥

[५] भग-लिङ्ग-गुणदोषवर्णनप्रकरणम्

कूर्मपृष्ठं गजस्कन्धं पद्मगन्धं सुगन्धि यत्।
अलोमकं सुविस्तीर्णं पञ्चैतद्भगमुत्तमम्॥ ३२॥

कछुए की ज्यों पीठ है या हाथी का स्कन्ध।
या कमलों के गन्ध सम जिस को अमल सुगन्ध॥
अथवा लोमविहीन हो या विस्तृत निर्खेद।
ये हैं पांच प्रकार के भग के सुन्दर भेद॥ ३२॥

भग के लक्षणः—कछुए की पीठ के समान, गज के स्कन्ध के सदृश, कमल के गन्ध के समान सुगन्धमय, लोम (रोआँ) से रहित, तथा अच्छीतरह फैला हुआ—ये पांच तरह के भग प्रशंसित हैं॥ ३२॥

शीतलं निम्नमत्युच्चं गोजिह्वासदृशं परम्।
इत्युक्तं कामशास्त्रज्ञैर्भगदोषचतुष्टयम्॥ ३३॥

शीतल या गहरी अधिक ऊँची अथवा जान।
गो की जीभों के सदृश या कठोरता मान॥
कामशास्त्र में विज्ञजन कहते इसी प्रकार।
यही चार तो दोष हैं भग दूषित आकार॥ ३३॥

भग के दोषः—शीतल, गहरी, अत्यन्त ऊँची, तथा गाय की जीभ के तुल्य कर्कश—ये चार प्रकार के भगदोष कामशास्त्र के पण्डितों ने बताया है॥ ३३॥

मुसलं वंशकवीरं द्विविधं लिङ्गलक्षणम्।
स्थूलं मुसलमित्युक्तं दीर्घं वंशकवीरकम्॥ ३४॥

मुसल व वंश–कवीर दो लिङ्ग भेद हैं धीर।
मोटे को कहते मुसल लम्बा वंश–कवीर ॥ ३४ ॥

लिङ्गभेद तथा लक्षणः—मुसल और वंशकवीर नामक लिङ्ग के दो भेद हैं। मोटा लिङ्ग को मुसल तथा लम्बा लिङ्ग को वंशकवीर समझना चाहिए ॥ ३४ ॥

[६] नायक-लक्षणप्रकरणम्

स्त्रीजितो गायकश्चैव नारीसत्यपरः सुखी ।
षडङ्गुलशरीरश्च स श्रीमान् शशको मतः ॥ ३५ ॥

नर जो नारी वश हुआ गाने वाला हो स्वयं।
नारी से सच बोलता जो सुखभोगी हो स्वयं ॥
छै अंगुल का लिङ्ग हो पूर्ण धनी हो सर्वदा।
विज्ञों के मत में वही 'शशक' कहा जाता सदा ॥ ३५ ॥

शश पुरुष के लक्षणः—जो नायक-नायिका के वश में हो, गाने वाला हो, नारी से सच बोलता हो, सुखी हो, लिङ्ग छः अंगुल का हो, धनी हो, उसे 'शश' या 'शशक' कहते हैं ॥ ३५ ॥

श्रेष्ठस्तु धार्मिकः श्रीमान् सत्यवादी प्रियंवदः ।
अष्टाङ्गुलशरीरश्च रूपयुक्तो मृगो मतः ॥ ३६ ॥

जो पुरुषों में श्रेष्ठ है धर्मशील धनवान।
सदा प्रेम से बोलता सच में जिसकी शान ॥
लिङ्ग आठ अंगुल समझ रूपवान भी जान।
'मृग' पुरुषों का भेद यह सच तू इसको मान ॥ ३६ ॥

मृग पुरुष के लक्षणः—जो नायक उत्तम हो, धर्मशील हो, धनी हो, सत्यवादी हो, प्रिय बोलने वाला हो, आठ अङ्गुल के लिङ्ग से युक्त हो, रूपवान हो, उसे 'मृग' नाम से पुकारते हैं॥ ३६॥

उपकारपरो नित्यं स्त्रीजितः श्लेष्मणः सुखी।
दशङ्गुलशरीरश्च मनस्वी बृषभो मतः॥ ३७॥

उपकारी नर सर्वदा नारी के वश में रहे।
कफ को जिस की प्रकृति हो स्वयं सदा सुख में रहे॥
दश अंगुल का लिङ्ग हो और मनस्वी हो सदा।
जाति 'वृषभ' उस पुरुष की यही नियम है सर्वदा॥ ३७॥

वृष पुरुष के लक्षण—जो नायक सदा परोपकारी हो, नायिका के वश में हो, कफ-प्रधान प्रकृति वाला हो, सुखी हो, दश अङ्गुल के लिङ्ग से युक्त हो वह पुरुष 'वृषभ' कहाता है॥ ३७॥

काष्ठतुल्यवपुर्धृष्टो मिथ्यावाक्यश्च निर्भयः।
द्वादशाङ्गुललिङ्गश्च दरिद्रश्च हयो मतः॥ ३८॥

हो कठोर तन काठ सा बोले सदा अलीक।
ऊपर से निर्लज्ज हो रहे सदा निर्भीक॥
बारह अंगुल लिङ्ग की जिसके रहती नाप।
'अश्व' जाति का पुरुष वह निर्धन रहता आप॥ ३८॥

हय (अश्व) पुरुष के लक्षणः—जिस पुरुष का शरीर काठ सा कठोर हो, स्वयं धृष्ट (ढीठ) हो, असत्यवादी, निर्भीक (निडर) हो जिसका लिङ्ग बारह अङ्गुल का हो, धनहीन हो, उसे अश्वजाति का पुरुष कहते हैं॥ ३८॥

[७] षोडशबन्ध-निरूपणप्रकरणम्

न रमन्ते यदा नार्यस्तृप्ता वा रमते च या।
नानाबन्धास्तथा वक्ष्ये रन्तव्या कामिभिः स्त्रियः ॥३९॥

नारी नर से तृप्त नहिं करे न नर संयोग।
आगे आसन हैं कहे उनसे रमणी भोग ॥ ३९ ॥

जब स्त्री पति अथवा प्रेमी से असन्तुष्ट होकर भोग न करे त
आगे कहे जाने वाले विविध प्रकार के आसनों द्वारा पुरुष क
चाहिए कि वह स्त्री से सम्भोग करे ॥ ३९ ॥

पद्मासनो नागपादो लतावेष्टोऽर्द्धसम्पुटः।
कुलिशः सुन्दरश्चैव तथा केसर एव च ॥ ४० ॥
हिल्लोलो नरसिंहोऽपि विपरीतस्तथाऽपरः।
क्षुद्गारो धैनुकश्चैव उत्कण्ठश्च ततः परः।
सिंहासनो रतिर्नागो विद्याधरस्तु षोडशः ॥ ४१ ॥

लतावेष्ट ओ नागपद सुन्दर कमलासन यथा।
केशर अरु विपरीत ज्यों कुलिश अर्द्धसम्पुट तथा ॥
उत्कण्ठा धेनुक नृसिंह—हिल्लोल क्षुद्गार।
सिंहासन रतिनाग अरु विद्याधर हैं यार ॥ ४०-४१ ॥

कमलासन, नागपाद, लतावेष्ट, अर्द्धसम्पुट, कुलिश, सुन्
केशर हिल्लोल, नरसिंह (नृसिंह), विपरीत, क्षुद्गार, धेनु
उत्कण्ठ, सिंहासन, रतिनाग, तथा विद्याधर, ये सोलह प्रकार
आसन कहे गये हैं ॥ ४०-४१ ॥

हस्ताभ्यां च समालिङ्गय नारीं पद्मासनोपरि।
रमेद्गाढं समाकृष्य बन्धोऽयं पद्मसंज्ञकः ॥ ४२

नारी को युग करों से आलिङ्गन कर भर सुषम।
रमण करे दृढ़ खींचकर यह 'पद्मासन' पद्म सम ॥ ४२ ॥

पद्मासन (कमलासन) का लक्षणः—नायक दोनों हाथों से स्त्री को जकड़ कर, पद्मासन के ऊपर दृढ़ता से सम्भोग करे। इस आसन का नाम पद्मासन है ॥ ४२ ॥

पादौ स्कन्दयुगे हस्तो क्षिपेल्लिङ्गं भगे लघु।
प्ररमेत्कामुको नार्यां बन्धो नागपदो मतः ॥ ४३ ॥

पैरों को धर कांध पर लिङ्ग योनि में डार।
कामुक, नारी से रमे 'नागपाद' यह यार ॥ ४३ ॥

नागपाद आसन का लक्षणः—कामी पुरुष स्त्री के दोनों पैर कन्धे पर चढ़ा कर दृढ़ रमण करे इसे नागपाद आसन कहते हैं ॥ ४३ ॥

बाहुभ्यां पादयुग्माभ्यां वेष्टयित्वा रमेत्स्त्रियि।
लघुलिङ्गं ताडयेद्यौनौ लतावेष्टोऽयमुच्यते ॥ ४४ ॥

दोनों पग अरु बाहु से जकड़ रमे उस नारि से।
योनि मथन हो लिङ्ग से 'लतावेष्ट' कहते इसे ॥ ४४ ॥

लतावेष्ट आसन का लक्षणः—पुरुष दोनों हाथों और दोनों पैरों से स्त्री को जकड़ कर भोग करे तथा लिङ्ग से योनि का मथन करे यह आसन लतावेष्ट कहलाता है ॥ ४४ ॥

स्त्रीपादावन्तरिक्ते तु किञ्चिद्भूमौ च जानुनि।
स्तनयोर्मर्दने पीडा बन्धोऽयमर्द्धसम्पुटः ॥ ४५ ॥

नारी का पद गगन में नर पद भूतल पर रहे।
मर्दन युग-कुच का सदा युग-कर से होता रहे ॥
कामी नारी से रमे शीघ्र इसी विधि से सदा।
अर्द्ध सम्पुटासन इसे कहते हैं बुध सर्वदा ॥ ४५ ॥

अर्द्धसम्पुट आसन का लक्षणः—कामी नायक नायिका के दोनों पैर आकाश की ओर उठा दे और अपने दोनों पैरों को जमीन पर रख कर दोनों हाथों से कुचों का लगातार मर्दन करता हुआ स्त्री से शीघ्रता पूर्वक भोग करे इसे अर्द्ध सम्पुट आसन कहते हैं ॥ ४५ ॥

स्त्रीपादद्वयमास्फाल्य हठाल्लिङ्गस्य ताडनम् ।
योनिमापीडयेत्कामी बन्धः कुलिशसंज्ञकः ॥ ४६ ॥

नारी के पग चीर कर लिङ्ग योनि में डार ।
कामुक हठपूर्वक रमे 'कुलिशासन' यह यार ॥ ४६ ॥

कुलिश आसन का लक्षणः—कामी पुरुष नारी के दोनों पैरों को अलग-अलग करके कठोरता से भग में लिङ्ग से निरन्तर ताडन करे, यह कुलिश आसन कहा जाता है ॥ ४६ ॥

नारीपादद्वयं स्वामी धारयेदूर्ध्वदेशतः ।
कुचौ धृत्वा पिबेद्वक्त्रं बन्धोऽयं रतिसुन्दरः ॥ ४७ ॥

नारी के दो पैर तो कामुक कर ऊपर सही ।
स्तन धर के मुख चूमना 'रति सुन्दर' आसन यही ॥ ४७ ॥

रति सुन्दर आसन के लक्षणः—पुरुष जब स्त्री के दोनों पैरों को ऊपर की ओर करके कुचों को पकड़कर मुख का पान करे, यह रतिसुन्दर आसन कहा जाता है ॥ ४७॥

स्त्रियो जङ्घे समापीड्य दोर्भ्यां गात्रस्य मर्दनम ।
पुनः प्रपोडयेद्योनिं बन्धः केशरसंज्ञकः ॥४८॥

नारी के युग जंघ मल हाथों से तन का मथन ।
भगताडन, रति पण्डितों का 'केशर' आसन कथन ॥ ४८ ॥

केशर आसन का लक्षणः—पुरुष जब स्त्री के दोनों जंघों का पीडन तथा दोनों हाथों से शरीर का मर्दन कर ले तब लिङ्ग से भग का दृढ़ ताडन करे । ऐसा केशर आसन कहा गया है ॥ ४८ ॥

हृदि कृत्वा स्त्रियः पादौ कराभ्यां धारयेत्करौ।
यथेष्टं ताडयेद्योनिं बन्धः केशरसंज्ञकः ॥ ४९ ॥

हिय धरि प्रेयसी पद-कमल कर में करिय कर सु-कर।
जीभर मदनविनोद-हित; यह 'हिल्लोल्लासन' प्रखर ॥ ४९ ॥

स्त्री के दोनों पैरों को उरःस्थल पर तथा हाथों को हाथों में कर के योनि का जीभर ताडन करे। इस आसन को 'हिलोल्लासन' कहते हैं ॥ ४९ ॥

पादौ सम्पीड्य योनौ चा हठाल्लिङ्गप्रवेशनम्।
हस्तयोर्वेष्टनं गाढं बन्धो नृसिंहसंज्ञकः ॥५०॥

पग धर करके, योनि में लिङ्गप्रवेश हठात्।
कर से आलिङ्गन कठिन यही 'नृसिंह' कहात ॥ ५० ॥

नृसिंह आसन का लक्षणः—कामी नर स्त्री के पैर और भग का मर्दन कर कठोरता से भग में लिङ्ग स्थापित कर दोनों हाथों से दृढ़ आबद्ध कर भोग करे तो यह आसन नृसिंह नाम से कहा जायगा ॥ ५० ॥

पादमेकमुरः कृत्वा द्वितीयं कटि संस्थितम्।
नारीञ्चा रमयेत्कामी विपरीतस्तु बन्धकः ॥ ५१ ॥

युवति-एक पद जांघ पर अपर पैर कर कमर पर।
कामी नारी से रमे 'विपरीतासन' यह सुघर ॥ ५१ ॥

विपरीत आसन का लक्षणः—स्त्री के एक पैर को अपने जंघे पर रखकर दूसरे पैर को कटि के सन्निकट लाकर जब कामी पुरुष स्त्री से सुखपूर्वक रमण करे तो यह विपरीत आसन कहा जायगा ॥ ५१ ॥

पार्श्वोपरि पादौ कृत्वा योनौ लिंगेन ताडयेत्।
बाहुभ्यां ताडयेद् गाढं क्षुद्गारो बन्ध एव सः ॥५२ ॥

पग दोनों ला पार्श्व पर लिङ्गयोनि में डार।
दोनों कर से दृढ़ मथन कहलाता 'क्षुद्गार' ॥ ५२ ॥

क्षुद्गार आसन का लक्षणः—कामी पुरुष स्त्री के दोनों परों को अपने पार्श्वों (बगल) पर रख कर लिङ्ग से भग का मथन करे और हाथो से भी दृढ़ मर्दन करे। यह क्षुद्गार आसन कहा जाता है ॥ ५२ ॥

सुप्तां स्त्रियं समालिङ्गच स्वयं सुप्तो रमेत्पुनः ।
यल्लिङ्गं चालयेद्योनौ बन्धोयं धैनुकः स्मृतः ॥ ५३ ॥

सोई नारी को पकड़ स्वयं लेट रमता रहे।
योनि लिङ्ग से दे हिला आसन 'धेनुक' यह कहे ॥ ५३ ॥

धेनुक आसन का लक्षणः—सोई हुई स्त्री का आलिङ्गन कर स्वयं भी लेट कर भग में लिङ्ग को चलायमान रखते हुए भोग करे। इसे धेनुक आसन कहते हैं ॥ ५३ ॥

नारीपादौ च हस्तेन धारयेद्गलके पुनः ।
स्तनार्पितकरौ कामी बन्धश्चोत्कराठसंज्ञकः ॥ ५४ ॥

नारी पद धर हाथ से कण्ठ पास ले जाय।
फिर स्तन मर्दन प्रेम से यह उत्कण्ठ कहाय ॥ ५४ ।

उत्कण्ठ आसन का लक्षणः—स्त्री के दोनों पैरों को हाथ से कण्ठ के निकट ला चुकने के अनन्तर कामी अपने दोनों हाथों को कुचों पर रखे। इसे उत्कण्ठ आसन कहते हैं ॥ ५४ ॥

स्वयं जङ्घाद्वयं बाहौ कृत्वा योषित्पदद्वयम् ।
स्तनौ धृत्वा रमेत् कामी बन्धः सिंहासनो मतः ॥ ५५ ॥

जिन जंघों पर रसिकजन नारी के पादलाय।
स्तन धर औरत से रमे 'सिंहासन' कहलाय ॥ ५५ ॥

सिंहासन का लक्षणः—स्त्री के दोनों पैरों को अपने जंघा पर रखकर कुचों का मर्दन कर कामी नायक स्त्री से भोग करे। इस आसन का नाम सिंहासन है ॥ ५५ ॥

पीडयेदूरुयुग्मेन कामुकः कामिनीं यदि ।
रतिनागः समाख्यातः कामिनीनां मनोहरः ॥ ५६ ॥

कामी अपनी जांघ से पीडन औ उपभोग कर ।
कामिनियों का मनहरण 'रतिनागासन' यह सुघर ॥ ५६ ॥

रतिनाग आसन का लक्षणः—कामुक पुरुष कामिनी को दोनों उरुभाग से दाब कर रमण करे। यह विधि कामिनियों के लिए पूर्ण मनोहारिणी है। इसे रतिनाग नामक आसन कहते हैं ॥ ५६ ॥

नार्याश्चोरुयुगं धत्वा कराभ्यान्ताडयेत्पुनः ।
रमयेन्निर्भरं कामी बन्धो विद्याधरो मतः ॥ ५७ ॥

नारी के दोनों जघन हाथों से कामुक बना ।
कामी दृढ़ रमता यही 'विद्याधर' आसन बना ॥ ५७ ॥

विद्याधर आसन का लक्षणः—स्त्री के दोनों जंघाओं को पकड़ कर भग का पीडन करता हुआ भरपूर रमण करे। इसे विद्याधर नामक आसन कहते हैं ॥ ५७ ॥

स्त्रियमानीय यत्नेन विधृत्य चरणाद्वयम् ।
वशं नयति यः कामी रतिशास्त्रविचक्षणः ॥ ५८ ॥

नारी को ला यत्न से धर युगचरण विधान ।
वश में करते जो रसिक वे रति के विद्वान् ॥ ५८ ॥

कामी की प्रशंसाः—जो कामी पुरुष प्रयत्न से स्त्री को अपने निकट लाकर उसके दोनों पैरों को पकड़ कर वश में करता है वह रतिशास्त्र का विद्वान् समझा जाता है ॥ ५८ ॥

रतिशास्त्रं समाकर्ण्य बन्धान् पद्मादिषोडश ।
नानाविधरतिं कुर्यात्कामिनीं कामुको जनः ।। ५९ ।।

कामशास्त्र ओ सोलहों कमलासन ये जान ।
विविधभांति भोगो युवति कामुक ! बन सज्ञान ।। ५९ ।।

कामी पुरुषों को चाहिए कि वे रतिशास्त्र को अच्छी तरह से सुन कर पद्मादि सोलह आसनों का सम्यक्ज्ञान करके कामिनी के साथ विविध भांति से रमण करे ।। ५९ ।।

सर्वशास्त्रार्थवक्त्रेण जयदेवेन धीमता ।
मञ्जरी रतिशास्त्रस्य कृता नीता समाप्तताम् ।। ६० ।।

इति श्रीजयदेवेन विरचिता रतिमञ्जरी समाप्ता ।
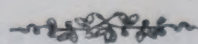
सकलशास्त्र कण्ठस्थ कर बुद्धिमान् श्रीमान् ।
की समाप्त 'रतिमञ्जरी' श्रीजयदेव महान ? ।। ६० ।।

सकल शास्त्रों के अर्थ के ज्ञाता बुद्धिमान् जयदेव कवि ने रतिशास्त्र की मंजरी (रतिमंजरी) लिखकर समाप्त कर दी ।। ६० ।।

चौखम्बा सीरीज द्वारा प्रकाशित सम्मानित चिकित्सा ग्रन्थः—

मानसिक एवं तन्त्रिका रोगचिकित्सा। (सचित्र) डा० प्रियकुमार चौबे। राष्ट्रभाषा हिन्दी में प्रथम प्रकाशित ग्रन्थ २५-००
आयुर्वेद का इतिहास। (सचित्र) श्रीवागीश्वर शास्त्री विरचित, कविराज श्री सत्यनारायणशास्त्री जी द्वारा प्राक् अनुमोदित प्र० भाग १५-००
आयुर्वेद-प्रदीप। (आयुर्वेदिक-एलोपैथिक गाइड) परिवर्धित नवीन संस्करण। संपादक डा० गंगासहाय पाण्डेय २०-००
प्रारम्भिक उद्भिद्शास्त्र। प्रो० बलवन्त सिंह १२-००
रसरत्नसमुच्चय। डा. अम्बिकादत्त शास्त्री कृत हिन्दी टीका २५-००
शालाक्यतन्त्र। डा० रमानाथ द्विवेदी। परिवर्धित संस्करण २५-००
सौश्रुती। डा० रमानाथ द्विवेदी ,, ,, २०-००
अगदतन्त्र। परिष्कृत संस्करण। डा० रमानाथ द्विवेदी ३-००
कौमारभृत्य। डा० रघुवीरप्रसाद त्रिवेदी। नवीन संस्करण १५-००
प्रारम्भिक रसायन। डा० फूल देवसहाय वर्मा १०-००
योगचिकित्सा। अत्रिदेव गुप्त विद्यालंकार ५-००
रोगनामावली कोष। (रोग निर्देशिका) ठा० दलजीत सिंह ६-००
यकृत् के रोग और उनका चिकित्सा। वैद्य सभाकान्त झा ३-००
रसादि परिज्ञान। पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल ४-००
सूचीवेध विज्ञान। डा. राजकुमार द्विवेदी ४-००
रसेन्द्रसारसंग्रहः। (सचित्र) 'गूढार्थसन्दिपिका' टीका सहित १०-००
रसेन्द्रसारसंग्रहः। (सचित्र) सविमर्श हिन्दी टीका सहित १०-००
शार्ङ्गधरसंहिता। सविमर्श सुबोधिनी हिन्दी टीका 'लक्ष्मी' टिप्पणी, पथ्याऽपथ्यादि विविध परिशिष्ट सहित १५-००
स्वास्थ्य-संहिता। नानकचन्द वैद्य कृत हिन्दी टीका सहित ४-००
क्वाथमणिमाला। पं. काशीनाथ शास्त्रीकृत 'विद्योतिनी' हिन्दी टीका ३-००
चक्रदत्त। वैद्य जगदीश्वरप्रसाद त्रिपाठी कृत हिन्दी टीका सहित ३०-००
सुश्रुत-शारीरस्थान। प्रभा-दर्पण हिन्दी टीका सहित शीघ्र
माडर्न इन्जेक्शन। (सचित्र) डा० प्रिय कुमार चौबे यन्त्रस्थ
हृदयदीपकनिघण्टुः सिद्धमन्त्रप्रकाशश्च। श्रीवोपदेवकृतः। शब्दकोश सहित। सम्पादक—आचार्य प्रियव्रत शर्मा शीघ्र

प्राप्तिस्थानं—चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी-२२१००१